अजित फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित
बाल पत्रिका

वर्ष 5 | अंक - 6 | माह - मार्च 2025

चहल पहल

अनुक्रमणिका

संपादकीय 3

कहानियां

मुट्ठी भर गुलाल	पवित्रा अग्रवाल	4
श्रेया ने कसम खाई	रन्दी सत्यनारायण	7
निकल गया बहम	डॉ. कुसुम रानी	12
लच्छू की होली	दिनेश विजयवर्गीय	23

कविताएं

धरा वसंती चूनर..	डॉ. राकेश चक्र	06
नींबू	गौरीशंकर वैश्य	09
गौरया रानी	नरेश चन्द्र	09
रंगों की दुकान	सुकीर्ति भटनागर	10
देखों नटखट बंदर	अशोक पटेल	10
होनहार बच्चे	राजेन्द्र कुमार	11

विविध

बच्चों का कोना	16 से 18	
बाल पहेलियां	डॉ. कमलेन्द्र	15
भूल—भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	19
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	20
एस्ट्रोनॉमी क्लब	संजय श्रीमाली	25

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित
संपादक - संजय श्रीमाली
मार्च 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण श्री कमल अग्रवाल, नोहर ने बनाया है। आवरण पर अंकित चित्र रूपिशा अग्रवाल, नोहर द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

त्यौंहारों को सादगी एवं सम्मानपूर्वक मनाना चाहिए

प्यारे बच्चों

हो जाओ तैयार आनन्द और मस्ती लेने के लिए। जी हां, मैं बात कर रहा हूं 'होली' की। बच्चों, युवा एवं सभी आयुवर्ग का चहेता त्यौंहार होली पूर्णतया आनन्द का पर्व है। जहां एक ओर बच्चों की टोलिया एक–दूसरे पर रंगों की बौछार करती है वहीं दूसरी ओर बड़े आपस में गले मिलकर गालों पर गुलाल या रंग लगाते नजर आते है।

होली से चार–पांच दिन पूर्व होली की छटा बाजारों एवं मोहल्लों में देखने को मिलती है। होलिकादहन के दूसरे दिन घुलण्ड़ी पर होली का त्यौंहार पूरे परवान पर चढ़ता है। चारो ओर रंगों की छटा और रंगों से सरोबार बच्चों एवं युवाओं की टोलियां। तरह–तरह के व्यंजनों का लुप्त उठाते हुए मौज–मस्ती करते हुए देखने को मिलते है।

बच्चों मैं यह कह रहा हूं कि हमें अपने त्यौंहार मनाने चाहिए लेकिन सावधानी भी रखनी चाहिए। वर्तमान में बाजारों में केमिकल युक्त रंग आने लग गए है, जिससे हमारा त्वचा पर बहुत खराब असर पड़ता है। उनसे हमें बचना चाहिए। दूसरी ओर हमें अपनी आंखों का विशेष ध्यान देना चाहिए। गुलाल हो या रंग हमें अपनी आंखों में नहीं गिरने देना चाहिए।

होली पर खाने–पीने के प्रति जागरूक रहना जरूरी है। इस दिन अगर हम बाजार से कोई भी खाने–पीने की वस्तु खाए तो साफ–सफाई एवं शुद्धता की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमें ज्यादा हुड़दंग एवं अभ्रदता नहीं करनी चाहिए। त्यौंहार को सादगी एवं सम्मानपूर्वक मनाना चाहिए तभी गरीमा बनी रहती है।

आप सबको होली की हार्दिक शुभकामनाएं !

संजय श्रीमाली

मुट्ठी भर गुलाल

पवित्रा अग्रवाल

चित्र साभार - www.pinterest.com

हमारे पड़ोस में दो महीने पहले ही एक परिवार रहने आया था। उनके तीन बच्चे थे। उनमें से एक 'रेणु' से मेरे अच्छी दोस्ती हो गई थी। खास बात यह थी कि वह मेरे स्कूल में व मेरे ही क्लास में पढ़ती थी।

होली आने वाली थी। माँ ने पकवान बनाने प्रारंभ कर दिये थे। हम सबके नए कपड़े भी आ गए थे। एक–दो दिन बाद पापा ने रंग व पिचकारी दिलवाने का वादा किया था। आधी छुट्टी के समय खाना खाते हुए मैंने रेणु से पूछ लिया, रेणु होली के लिए रंग–पिचकारी ले आई ?

रेणु उदास हो गई थी, हमारे यहाँ होली नहीं खेली जाती शालिनी। क्यों ?

बहुत साल पहले जब हमारा जन्म भी नहीं हुआ था तब हमारे ताऊजी की मौत होली के दिन हो गई थी। तब से ये त्योहार हमारे लिए खोटा हो गया है... कहते हैं जब होली के दिन हमारे परिवार में किसी बच्चे का जन्म होगा तब से होली मनाना फिर शुरू हो जाएगा... लेकिन ऐसा बहुत कम होता है।

मैंने पूछा– रेणु, होली खेलने को तुम्हारा मन नहीं करता ?

सच पूछो तो शालिनी, होली खेलना हम तीनों भाई–बहनों को बहुत पसंद है। मैं ग्यारह वर्ष की हूँ और अब तक बस दो बार होली खेली है। होली की छुट्टियों में हम मौसी के घर चले जाते थे।...होली खेलने में बहुत मजा आता था...अब मौसी का ट्रान्सफर बहुत दूर हो गया है।...होली के दिन हमारा अपने घर में रहने को दिल नहीं करता...लेकिन कहाँ जाएँ ? पास में कोई भी रिश्तेदार नहीं रहता। कहकर रेणु फिर उदास हो गई थी। रेणु इस बार होली पर मैं तेरे घर आऊँगी और तुम्हारे मम्मी–पापा से प्रार्थना करके तुम्हें अपने घर ले जाऊँगी, वहाँ हम खूब होली खेलेंगे।

रेणु ने ऐसा करने को मना किया था फिर भी होली के दिन मैं रंग–गुलाल व पिचकारी के साथ उसके घर चली गई और अनजान बनते हुए उसकी दादी से कहा था– दादी जी, होली खेलने के लिए रेणु को मैं अपने घर ले जाऊँ ? मुँह लटका कर बैठे हुए रेणु का भाई बोला, शालिनी दीदी हमें होली खेलना बहुत अच्छा लगता है लेकिन हमारे यहाँ होली नहीं खेली जाती। क्यों ?

वह कुछ कहता उससे पहले ही उसकी दादी जी बोली– बिटिया बहुत वर्ष पहले होली के दिन रेणु के ताऊजी की मौत हो गई थी। तब से हमारे यहाँ होली नहीं मनाई जाती।

दादी जी, चार–पाँच साल पहले होली के दिन मेरी दादी माँ की भी मौत हुई थी। दो वर्ष हमारे यहाँ भी होली नहीं मनाई गई। बाद में दादा जी ने हमें होली मनाने की छूट दे दी। उस दिन तुम्हारे परिवार में किसी बच्चे का जन्म हुआ था क्या ? नहीं दादी जी, होली के दिन हमारे यहाँ किसी बच्चे का जन्म नहीं हुआ था...लेकिन हमारे दादा जी बहुत अच्छे व समझदार हैं। हम लोगों की उदासी उनसे नहीं देखी गई। उनका कहना था कि होली पर रंग खेलने और मौज मस्ती करने का मन तो बड़े–बड़ों का भी कर आता है। मेरे ये नन्हे मासूम बच्चे इस दिन खुशी की जगह मातम मनाए, ये मुझे पसंद नहीं है। उनका कहना था कि हमारे देश में महान लोगों जैसे गांधी जी, नेहरूजी आदि का जन्म दिवस व मृत्यु–दिवस तारीख के हिसाब से मनाया जाता है। हम लोग भी घरों में बच्चों का जन्मदिन व किसी भी सदस्य की पुण्य तिथि तारीख के हिसाब से मनाते हैं फिर यदि त्योहार के दिन किसी की मृत्यु हो गई तो उसको त्योहार से नहीं जोड़ना चाहिए। हमारी दादी की मौत सात मार्च को हुई थी। वह तो चांस है कि उस दिन होली भी थी किंतु हर वर्ष सात मार्च को होली

नहीं होती। बस यही सोच कर दादा जी ने हमें होली खेलने की आज्ञा दे दी। हर वर्ष सात मार्च को दादा जी घर में हवन कराते हैं और जरूरतमंद को खाना खिलाते हैं। बिटिया सच में तुम्हारे दादा जी की बातों में दम है। अब तक अज्ञानता वश हमने अपने बच्चों के इस उल्लास–पर्व को मातम के रंगों से ढ़क रखा था...लेकिन अब और नहीं...

दादी जी ने मेरे हाथों में से मुट्ठी भर गुलाल उठा कर रेणु व उसके भाइयों के मुँह पर मल दिया था। बच्चों के चेहरों पर उल्लास के रंग चमकने लगे थे। रेणु ने मेरी तरफ कृतज्ञता पूर्ण नेत्रों से देखा था और मेरे साथ घर से बाहर निकल आई थी।

पता– महादेवपुरा, बैंगलौर

धरा वसंती चूनर ओढ़े

डॉ राकेश चक्र

चित्र : राम भादानी

प्रकृति करे श्रृंगार खिल गई अमराई।
धरा वसंती चूनर ओढ़े मुस्काई।।

हुईं पल्लवित मौर कली भी
बाग–बगीचे हरषाए।
मौन पड़ी श्यामा कोयल भी
मंगल गीत धुन सुनाए।

ठिठुरन, कोहरा लोप हुए
ऊर्जा आई।।

ऋतु परिवर्तन हुआ धरा पर
मस्त हवा पछुआ चलती।
पतझड़ होता नई कोपलें
प्रेम–पत्र के खत लिखतीं।

मन में विश्वास जगा
बजतीं शहनाई।।

तोते, बुलबुल गीत सुनाएँ
नए राग और तान में।
बच्चे चहक रहे स्कूलों
भारत माँ की शान में।

चंदा, तारे खिले–खिले
प्रतिभा पाई।।

फागुन का आगमन हुआ है
गेंहू, सरसों प्रीत लिखें।
भोर लिख रही नई किताबें
मस्ती की कुछ रीत दिखें।

सोई प्रकृति नए पत्र पर
देती आज बधाई।।

पता– 90 बी, शिवपुरी, मुरादाबाद

श्रेया ने कसम खाई

रन्दी सत्यनारायण राव

श्रेया के पापा अभी आफ़िस से घर पहुंचे ही थे की रसोई घर से जोर–जोर से चीखने–चिल्लाने की आवाज सुन चौंक पड़े। और उस तरफ दौड़ पड़े। उन्होंने देखा– उनकी दस वर्षीया बेटी श्रेया किसी बात पर रो–रो कर अपना बुरा हाल किये हुए थी। उसकी मम्मी गैस चूल्हे पर उसके लिए चपाती बना रही थी। वह अपने पापा को सामने पाकर और जोर से रोते हुए। अपनी मम्मी की शिकायत करते हुए बोली– पापा, देखिये न आज मम्मी ने खाने को बर्गर, पिज्जा, कुछ नहीं दिया कहती है, आज चपाती खा कर रहो। पैसे ख़त्म हो गए। आनलाईन आर्डर कर अब बाहर से चीजें नहीं मंगवा सकती। आप रोज मुझे चाउमीन, चिप्स, मंचूरियन, चाट मसाला, लिट्टी चोखा मंगवा कर खिलाते रहते है, और मम्मी है कि चपाती से आगे बढती ही नहीं है। श्रेया की बात सुन, उसकी मम्मी ने उसके डांटते हुए कहा– 'हर रोज स्कूल से घर आते ही तुम्हें, बाहर की चटकारे वाली चीजें खाने को चाहिये। तुम्हारे पापा की इतनी आमदनी नही कि, ऐसा रोज रोज मंगवा कर खिला सकें। और पता भी है कि, बाजार की खाने की सामग्री, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है क्या यह स्कूल में नहीं पढ़ाया जाता... ? आज से यह अपनी आदत सुधार लो और जो घर पर बना कर देती हूँ उसे ही खा कर रहो। इससे सेहत अच्छी बनी रहेगी। वह श्रेया के पापा की और मुंह कर बोली– श्रेया को आपके ही लाड़ प्यार ने बिगाड़ा है।

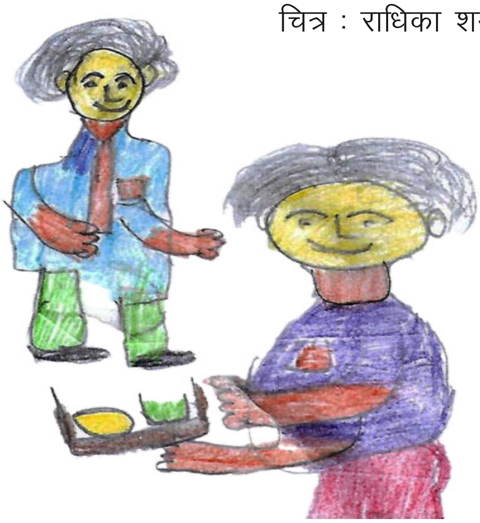

चित्र : राधिका शर्मा

श्रेया के पापा, उसकी मम्मी की बात से सहमत होते हुए भी उन्होंने श्रेया

का पक्ष लेते हुए कहा– ठीक है भागवान, हमारी बेटी की इच्छा भी तो कोई चीज है, स्कूल से थक हार कर घर आती है तो, अपनी पसंद की चीज खा कर खुश हो जाती है। अब शांत हो जाओ बेटा...लो तुम्हारी पसंद की 'भेल पूरी' मंगवाए देता हूँ। अभी आ जाएगा। और उन्होंने ऑनलाईन आर्डर दे दिया। श्रेया की मम्मी जल भुन कर रह गई। इधर घर का बजट भी बिगड़ता जा रहा था। यह सब चल ही रहा था कि अचानक एक दिन, श्रेया की मम्मी के पास स्कूल से प्रिंसपल का फोन आया– हैलो.. मैं, श्रेया के स्कूल की प्रिंसपल बोल रही हूँ, क्या श्रेया की मम्मी से बात हो सकती है अर्जेन्ट केस है। श्रेया की मम्मी ने फोन उठा कर जवाब दिया– जी, मैं श्रेया की मम्मी ही बोल रही हूँ, क्या बात है प्रिंसपल जी ...? प्रिंसपल की आवाज में घबराहट थी, इसका आभास श्रेया की मम्मी हो गया था। कुछ अनहोनी की आशंका से वह भी घबरा गई। फ़िर उन्होंने पुछा– क्या बात है प्रिसंपल जी, प्रिंसपल ने बताया, आपकी बेटी श्रेया को बहुत जोरों से पेट दर्द है। वह असहनीय दर्द से तड़प रही है। कृपया, आप जल्दी से आकर घर ले जाएँ। यह सुन, श्रेया की मम्मी बुरी तरह घबरा गई। ऑटो रिक्शा से स्कूल जा कर श्रेया को घर लाई। श्रेया की हालत बिगड़ती जा रही थी। श्रेया की हालत का पता चलते ही, उसके पापा भी दौड़े आये। श्रेया को अस्पताल पहुंचाया।

डाक्टर ने प्राथमिक जांच कर उसे, और गहन चिकिस्ता के लिए भर्ती होने को कहा। श्रेया को डाक्टर अंकल ने बताया– श्रेया बेटा, आपको कुछ नहीं हुआ है, केवल एक बात पर ध्यान दीजिये कि, बाहर के खाद्य पदार्थ नहीं खाने हैं, बाजार की चीजों में ,चटकारापन और स्वाद लाने के लिए बहुत सी अस्वस्थ्यकर सामग्री उपयोग में लायी जाती है यह पेट की बीमारियों को पैदा करते हैं। ऐसे पदार्थो के सेवन से आरम्भ में तो पता नहीं चलता लेकिन हमेशा लेने पर ये पाचन–तंत्र पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। श्रेया को ठीक होने में समय लग रहा था। वह देख रही थी उसकी बिमारी के कारण पापा को भी छुट्टी लेनी पड़ रही थी। मम्मी को घर और उसकी देख भाल में कष्ट हो रहा था। उसने जाना की वहीं बीमार नहीं हुई है, बल्कि मम्मी–पापा भी उसकी तीमारदारी में बीमार हो गये से लग रहे हैं।

अब श्रेया को अपनी जिद्द और मम्मी की बात को अनसुना करने का पछतावा था। उसने कसम खाई कि अब से वह घर में मम्मी के हाथ का बना खाना ही खाएगी।

पता – जमशेदपुर, झारखंड

नींबू

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

चित्र साभार - www.stock.adobe.com

नींबू बहुत ही गुणकारी है, इसकी अजब कहानी।
घर का वैद्य पुराना मानो, बड़ा अनुभवी, ज्ञानी।

सब्जीवाले खूब बेचते, लगा–लगा कर ठेले
पीले–हरे, बड़े–छोटे हैं, गोल–गोल अलबेले
हर मौसम में आते रहते मिलने में आसानी।

दिखने में छोटे हैं नींबू, काम बड़े पर करते
जूस–पेय के भी विकल्प हैं, पेट रोग हैं हरते
लू लगने से हमें बचाते, कहतीं दादी–नानी।

प्रोटीन–कार्बोहाइड्रेट से भरे, खनिज के साथ विटामिन
स्वास्थ्य और सौन्दर्य से जुड़े, लाभ मिल रहे अनगिन
रक्तचाप, मधुमेह, गैस की, देते मिटा निशानी।

स्वाद बढ़ा देते पानी का, नई ताजगी देते
वजन घटा देते शरीर का, खबर कब्ज की लेते
सुबह गर्म नींबू पानी से, दिनचर्या हो सुहानी।

पता – 117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ

गौरैया रानी

चित्र – आचार्य

नरेश चन्द्र उनियाल

आ जाओ गौरैया रानी,
हमें सुना दो कोई कहानी।
कान तरसते हैं सुनने को,
तेरी सुन्दर मीठी वानी।

मेरे घर में फिर आ जाओ,
चूँ–चूँ कर आँगन महका दो,
कहाँ खो गयी हो प्यारी तुम,
दिखती कोई नहीं निशानी।

तुम बिन सूने गाँव हमारे,
सूने घर आँगन चौबारे,
राह तेरी तकती हैं आँखें,
बरस रहा नैनों से पानी।

पता – पौड़ी गढ़वाल
उत्तराखण्ड

रंगों की दुकान

सुकीर्ति भटनागर

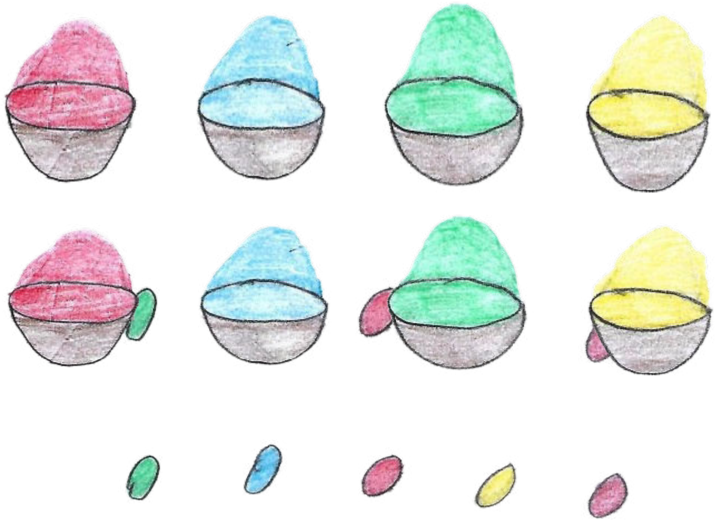

चित्र – धीरज कच्छावा

रंगों की दुकान
रंगों की दुकान निराली,
रंग बड़े अलबेले।
नीला, पीला, हरा, जामुनी,
मन चाहे जो ले ले।।
हल्के, गाढ़े, सभी रंग हैं,
श्वेत, गुलाबी, काला,
नारंगी है और बसन्ती,
लाल रंग मतवाला।।
आपस में ही घुलमिल जाते,
इनका मेल अनोखा।
बन जातीं रचनाएँ सुंदर,
रंग चढ़े जब चोखा।।

सही दिशा जीवन को देते,
जीना हमें सिखाते।
सदा प्यार से रहना सीखें,
रंग यही समझाते।।

पता– 432, अर्बन एस्टेट, फ़ेज़ 1, पटियाला

देखो नटखट बंदर आया है

अशोक पटेल 'आशु'

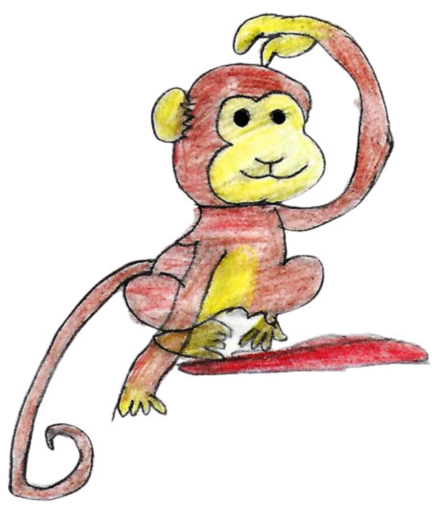

चित्र – आनन्द शर्मा

देखो नटखट बंदर आया है
जमके उछल कूद मचाया है
कभी आँखें लाल दिखाता है
तो कभी वह दांत दिखाता है
फिर पेड़ पे वह चढ़ जाता है
यहाँ–वहाँ छलांग, लगाता है
पके–पके फल वह खाता है
कच्चे फल को छोड़ जाता है
बच्चों को खूब मजा आता है
चारो तरफ धूम मच जाता है

पता –छत्तीसगढ

होनहार बच्चे

राजेन्द्र कुमार सिंह

चित्र – दिव्या जावा

चुन्नू मुन्नू थे पड़ोसी
घर में थी गरीबी
पढ़ने में अव्वल दोनों
दोस्त बहुत करीबी।

अक्सर दोनों साथ रहते
मिल जुलकर पढ़ते
बाकी समय में करते काम
सब्जी बेचते ठेला में
खुब बिक्री होती उनकी
फुर्सत नहीं रहती
शाम के बेला में।

ग्राहक भी इनका
करते बेसब्री से इंतजार
संबंध रखते थे सबसे
बढ़िया मधुर व्यवहार।
समय तनिक नहीं गंवाते
करते पूरा–पूरा उपयोग
अल्प समय में काट दिया
घर के गरीबी रूपी रोग

अब वे जहां कहीं भी जाते
सबसे भाई चारा वे निभाते
समूचे गांव में पहचान बनी
सबका आदर स्नेह पाते।

सुबू खुबू थे बिगड़ैल दो भाई
चुन्नू मुन्नू की सफलता देख
उनकी आंखे भर आई
देखकर उनकी अच्छाई ।

संकल्प लिया दोनों ने
हमें कुछ बनकर है दिखाना
उनके जैसा अपना भी
एक अलग मुकाम बनाना।

चुन्नू मुन्नू के पग चिह्नों पर
चल पड़े सुबू खुबू दोनों भाई
आधा समय काम करते
बाकी समय करते वह पढ़ाई।

परिश्रम से संभव हुआ
पहले पढ़ने में थे कच्चे
अच्छे अंको से पास हुए
बने यह भी होनहार बच्चे।

पता – महाजन हास्पिटल
समोर, नाशिक, महाराष्ट्र

निकल गया वहम

डॉ. कुसुम रानी नैथानी

बक्की हिरन बहुत तेज तर्रार और स्वभाव से झगड़ालू था। वह वन में हर किसी से लड़ता झगड़ा रहता। वनवासी उसके बड़े–बड़े सींग देखकर बहुत डरते थे और उसके मुंह न लगते। वह हर किसी को समझाता रहता लेकिन दूसरे की बात उसकी समझ में कभी न आती। उसकी इन हरकतों से समूचा वन परेशान था। मिन्नी और शिन्नी बिल्ली से वह विशेष तौर पर खार खाता था। वह भी उसके डर के मारे उसके सामने से न गुजरती। कभी गलती से भी उन्होंने उसका रास्ता काट दिया तो उनकी खैर न रहती।

सबने उसे समझाया कि बिल्ली के रास्ता काटने से कुछ नहीं होता लेकिन वह कुछ सुनने को तैयार नहीं था। बक्की का गुस्सैल स्वभाव पूरे वन के लिए सिरदर्द बन चुका था। उसकी आदत थी हर बात पर झगड़ना और अपनी बात को सही साबित करने के लिए किसी की भी सुनने से इनकार कर देना। उसके बड़े–बड़े सींग देखकर सभी उससे खौफ खाते और उसे टोकने की हिम्मत नहीं करते थे। मिन्नी और शिन्नी बिल्लियाँ उसकी सबसे ज्यादा शिकार बनती थीं। वे दोनों हर समय बक्की को लेकर सचेत रहती। उसे देखते ही वे डर के मारे रास्ता बदल देतीं।

एक बार बक्की वन के रास्ते से गुजर रहा था। तभी उसने चटकू खरगोश को गाजर के खेत से बाहर आते हुए देखा। बक्की पर नजर पड़ते ही उसने जल्दी से सड़क पार की और दूसरी ओर चला गया। यह देखकर उसे बड़ा बुरा लगा। वह तेजी से भाग कर चपटू के सामने खड़ा हो गया और गरजते हुए बोला– तुमने मेरे सामने से दौड़कर रास्ता क्यों पार किया ? मुझे काम पर जाने की जल्दी है।

मैं भी तो जानूं ऐसा क्या काम आ गया जिसकी वजह से तुम मेरा अदब करना भूल मुझे इग्नोर कर निकल गए। अब जाने भी दो बक्की भाई। मुझसे

गलती हो गई। आइंदा ध्यान रखूंगा। चपटू हाथ जोड़ते हुए बोला। यह देखकर उसे बहुत अच्छा लगा। उससे पीछा छुड़ाकर चपटू अपने रास्ते चल दिया। अगर वह उसके मुंह लगता तो बक्की उसे आसानी से जाने नहीं देता। उसने मन ही मन सोचा कि बक्की की सोच बदलने का कोई न कोई तरीका निकालना होगा।

एक दिन बक्की तालाब के पास पानी पी रहा था। तभी उसने देखा पास ही में दीनू कछुआ धूप सेंक रहा है। बक्की ने उसे टोका– तुम सुबह–सुबह यहां क्या कर रहे हो दीनू ? तुम्हें पता होगा इस समय वनवासी यहां पानी पीने आते हैं। तुम्हारा मनहूस चेहरा देखकर उनका पूरा दिन खराब हो जाता है। बक्की तुम इतने बड़े और समझदार हो फिर भी ऐसी बातें करते हो ? ये सब तुम्हारा बहम है। अगर तुम्हें कुछ बुरा लगता है तो यह केवल तुम्हारी सोच का नतीजा है। अब तुम सिखाओगे मुझे की बहम क्या होता है ?

साभार www.youtube.com

मेरे कहने का यह मतलब नहीं है। बात को घूमाने की कोशिश मत किया करो। तुमसे पहले किसी ने भी ऐसी शिकायत नहीं की। वनवासी पानी पीने के अलावा मुझसे दुआ सलाम भी करते हैं और मुझसे राय भी लेते हैं।

तुम अपने आप को बहुत विद्वान समझते हो लेकिन तुम्हारी गलतफहमी में एक दिन दूर कर दूंगा। मेरी बात का यकीन ना हो तो खुद पर वनवासियों से पूछ लो। दीनू बोला। बक्की ने उसकी बात अनसुनी कर दी और गुस्से में बगैर पानी पिए वहां से चला गया। उसकी इसी आदत से मिन्नी और शिन्नी परेशान थीं। वे उससे बचकर निकलना चाहती लेकिन वह किसी ने किसी बहाने उनके सामने आ जाता और बुला भला कहने लगता। आज सुबह सवेरे जैसे ही उन्होंने झाड़ी में बैठे चूहे पर छलांग लगानी चाही तभी सामने से बक्की आ गया। उसे देखते ही दोनों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई।

मेरे मना करने के बाद भी तुम्हें बात समझ में नहीं आती। ऐसी बात नहीं है बक्की। हमें भी सुबह के समय भूख लगती है। खाने के इंतजाम के लिए घर से निकालना पड़ता है। अब अचानक तुम सामने आ गए तो हम क्या करें ?

इसमें भी मेरी ही गलती है। तुम

दोनों की कोई गलती नहीं है। लगता है अब तुम्हारे डर की वजह से मुझे घर से बाहर निकलने से पहले सोचना पड़ेगा। इतना कहकर उसने गुस्से से सिर हिलाया तो उसके बड़े–बड़े सींग देखकर उन दोनों ने वहां से चुपचाप चले जाने में ही भलाई समझी।

मिन्नी और शिन्नी दोनों बिल्लियों ने तय कर लिया कि अब बक्की को सबक सिखाना ही पड़ेगा। अगले दिन उन्होंने जान बूझकर एक पुराने घर के पास जाकर झगड़ा करने का नाटक शुरू कर दिया। यह घर वन के एक कोने में था और इसके बगल में खड़ी सीढ़ियाँ छत की ओर जाती थीं। बक्की ने दूर से उन्हें झगड़ते देखा तो उसका गुस्सा बढ़ गया। इनकी हिम्मत देखो। ये दोनों मेरे सामने झगड़ रही हैं। अब इन्हें सबक सिखाना ही होगा। वह बड़बड़ाया और तेजी से उनकी ओर दौड़ा। जैसे ही बक्की उनके नज़दीक पहुँचा मिन्नी और शिन्नी सीढ़ियों की ओर भागी। बक्की भी गुस्से में उनके पीछे–पीछे सीढियों पर चढ़ने लगा। लेकिन सीढ़ियाँ पुरानी और फिसलन भरी थीं। बक्की का पैर उन पर फिसल गया और वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। यह देखकर दोनों मन ही मन खुश हो गईं। गिरने की वजह से उसकी दायीं टांग बुरी तरह चोटिल हो गई। शिन्नी ने उसकी ओर देखा और कहा– बक्की यह तुम्हारी बुरी आदत का नतीजा है। अगर तुम दूसरों की बात पर ध्यान न देकर उन्हें तंग करना छोड़ देते तो आज तुम्हारे साथ यह सब नहीं होता।

बक्की दर्द से कराहते हुए चुपचाप उनकी बातें सुनता रहा। वह समझ चुका था कि उसकी ज़िद और झगड़ालू स्वभाव ने ही उसे इस स्थिति में पहुंचाया। किसी तरह वह घिसटता हुआ अपने ठिकाने की ओर बढ़गया। गुल्लू गिलहरी को उसकी हालत पर बहुत दया आई। उसने उस पर जड़ी बूटी का लेप लगा दिया।

आज पहली बार बक्की ने अपनी गलती स्वीकार की। उसे ठीक होने में दो हफ्ते लग गए। इस दौरान वनवासियों ने उसकी बहुत मदद की। मिन्नी और शिन्नी भी उसकी कुशल जानने रोज उधर एक चक्कर लगा जाती थी। बक्की को एहसास हो गया कि बिल्ली के रास्ता काटने से कुछ नहीं होता। यह देखकर उसने वन के सभी जीवों से अपने बुरे बर्ताव की माफी मांगी और वादा किया कि वह अब से किसी को तंग नहीं करेगा। धीरे–धीरे बक्की का व्यवहार बदल गया और वन में वह सबका प्रिय बन गया।

पता– ओंकार रोड, यू.के.

बाल पहेलियां

डॉ. कमलेन्द्र कुमार

1

सदा दूध से बनती
हूँ मैं,
तीन अक्षर का नाम।
प्रथम हटे तो बड़ी बनूँ मैं,
मिष्ठान नहीं मैं
आम।।

2

खोए और शक्कर से
बनता,
चपटा गोल–गोल आकार।
दो अक्षर का नाम हमारा,
मीठा–मीठा मैं
आहार।।

उत्तर

1–रबड़ी
2– पेड़ा
3–इमरती
4–बर्फी

3

उड़द दाल से
बनती हूँ मैं,
चपटा गोल–गोल आकार।
डुबो–डुबो कर शीरे में
मुझको, खाओ राजू,
राजकुमार।।

4

खोए चीनी से
बनती हूँ,
है घनाभ आकार।
रानी, राधा, मुनमुन, गौरी,
बोलो सोच
विचार।

पता –कालपी जिला जालौन
उत्तर प्रदेश

बच्चों का कोना

नाएमा नाटवया, दिल्ली

अयाना ओमार, गुजरात

युवाक्षी बिन्नाणी, मुम्बई

बिन्दू, तमिलनाडू

साधना, तमिलनाडू

सुदर्शना हर्ष, बीकानेर

नैतिक थानवी, जोधपुर

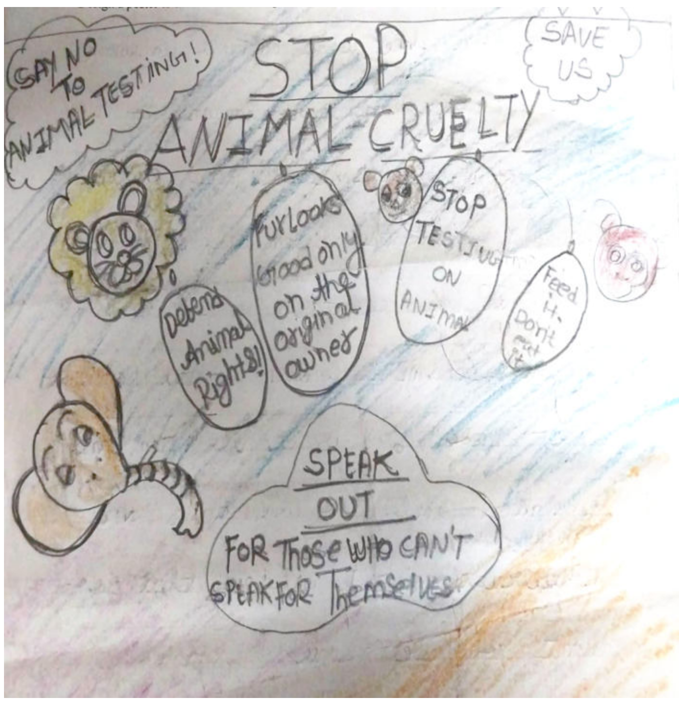

आयुष्मान जोशी, बीकानेर

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

दोनो चित्रों में दस अंतर बताओ

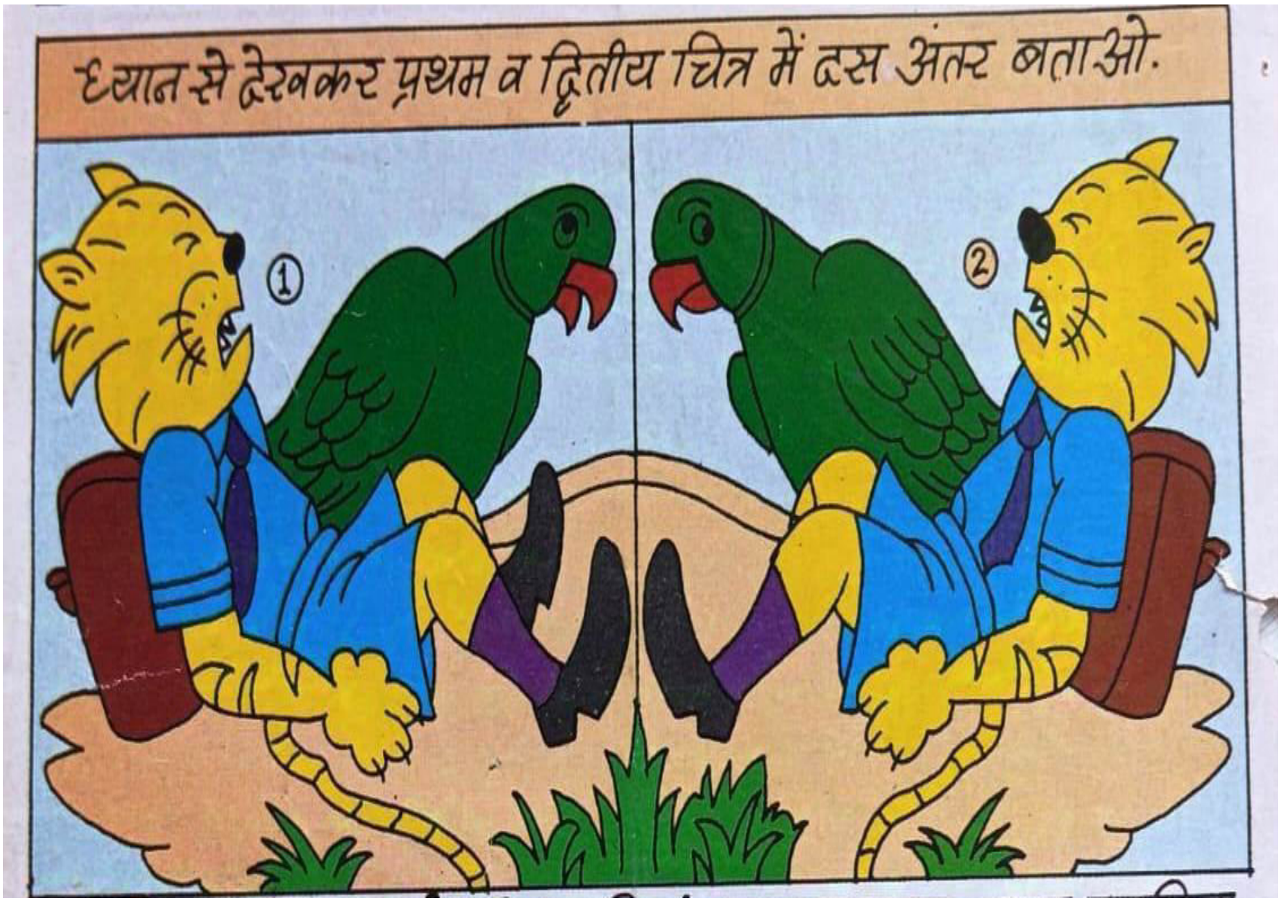

नंबर 1 व 2 चित्र में अंतर :– 1. बिल्ले का कान भिन्न है। 2. नाम मोटी है। 3. टाई भिन्न है। 4. बस्ते में अंतर है। 5. एक बूट कम है। 6. पूंछ में अंतर है। 7. तोते की आंख भिन्न है। 8 चोंच में अंतर है। 9. झाड़ी की पत्तियां भिन्न है। 10. तोते का पंख भिन्न है।

पता – नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी

दुनिया के देश

संजय पुरोहित

बुल्गारिया

कैसे हो मेरे प्यारे प्यारे दोस्तों। मुझे पूरा भरोसा है कि अब आप सब सीरीयसली फाईनल एग्जाम की तैयारियों में जुट गये होंगे। कुछ पेरेंट्स घर ओर ऑफिस दोनों का काम करते होंगे। वैसे ही आपका काम है पढ़ना। खूब पढ़ना। मन लगा कर पढ़ना। लेकिन पढ़ने के साथ साथ मस्ती करना। खेलना कूदना और दुनिया जहान के बारे में अपडेट रहना भी जरूरी है। बस ! इसी पॉईन्ट पर संजय अंकल से आपका मिलना होता है। वो इसलिये कि हम शब्दों के जरिये ही दुनिया के देशो का भ्रमण करते हैं। तो आज चलते हैं एक खूबसूरत देश की यात्रा पर। ये देश है बुल्गारिया। बुल्गारिया अपने बेहद सुन्दर गावों, स्वादिष्ट भोजन और मेहमानवाजी के लिये प्रसिद्ध है। बुल्गारिया एक समृद्ध हिस्टोरिकल और कल्चरल हैरिटेज वाला अद्भुद देश है। यहां सुन्दर समुद्र तट हैं। सुनहरी रेत और क्रिस्टल क्लियर नीले समुद्र हैं। त्सरेवेंट्स का महल है। पुरानी राजधानी वेलिको टार्नोको, डेन्यूब नदी के पास की पुरानी राजधानी, प्लोवदीव का कलात्मक शहर है और है बुल्गारिया की कल्चरल, फाईनेन्सियल, एज्युकेशनल शक्ति का केन्द्र सोफिया। कहा जाता है कि बुल्गारिया सबसे पुराने यूरोपियन देशों में से एक हैबुल्गारिया थ्रेस नामक एक प्राचीन क्षेत्र का घर था जो अब बुल्गारिया, रोमानिया और उत्तरी ग्रीस है। बाल्कन प्रायद्वीप पर स्थित थ्रेस ग्रीस और पश्चिमी यूरोप के बीच एक प्रमुख यात्रा मार्ग था। रोमन साम्राज्य ने पहली शताब्दी ई. में थ्रेस पर विजय

साभार – www.blogesnuek.com

प्राप्त की थी।

बुल्गारिया मानवों की बस्ती के रूप में बहुत पुराना है। मोटाना नामक स्थान के पास लगभग 6800 साल पुराना एक शिलालेख पाया गया है। इसे पढ़ पाना अभी तक संभव नहीं हो पाया है पर यह अनुमान लगता है कि यहां उस समय से मानव रहते होंगे। 1972 में ब्लैक सी के तट पर स्थित वार्ना नामक स्थान पर सोने का

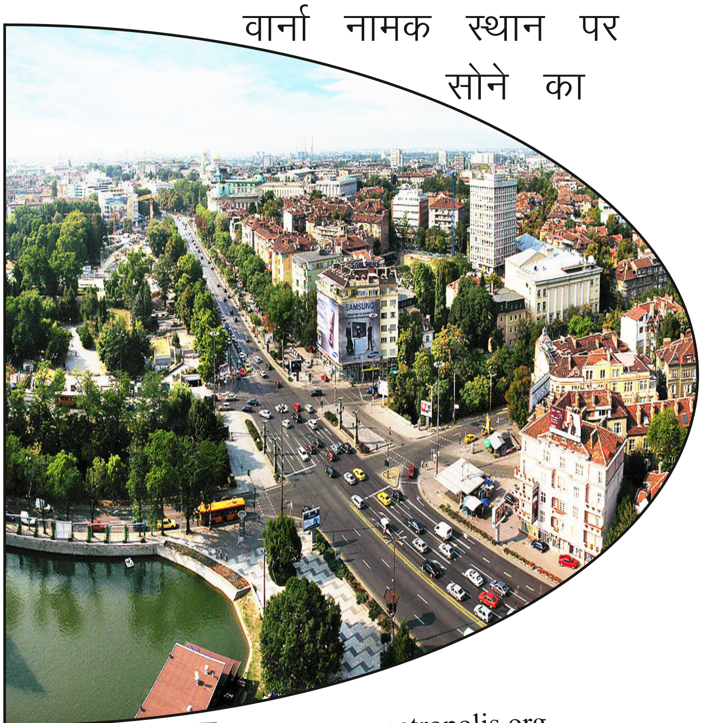

साभार – www.use.metropolis.org

खजाना पाया गया जिस पर रॉयल चिन्ह अंकित थे। इससे भी अनुमान लगता है कि बहुत पुराने समय में भी यहां कोई स्टेट रहा होगा। बुल्गारिया साऊथ ईस्ट यूरोप में स्थित है। इसकी राजधानी है सोफिया। बुल्गारिया के बॉर्डर नॉर्थ में रोमानिया, वेस्ट में सर्बिया और मेसेडोनिया, साऊथ में ग्रीस और तुर्की है। ईस्ट का बॉर्डर ब्लैक सी निर्धारित करती है। बुल्गारियन साम्राज्य के पतन के बाद इसे ओटोमन शासन ने अपने अधीन कर लिया था। 1877–78 में हुए रूस व तुर्की के युद्ध ने बुल्गारिया को पुनः स्थापित करने में मदद की। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बुल्गारिया कम्युनिस्ट स्टेट और ईस्ट ब्लॉक का हिस्सा बन गया। 1989 की क्रांति के बाद 1990 में कम्युनिस्टों का सत्ता से एकाधिकार समाप्त हो गया और बुल्गारिया संसदीय गणराज्य यानी पार्लियामेंटरी रिपब्लिक के रूप में आगे बढ़ने लगा। बुल्गारिया 2004 से नाटो का और 2007 से यूरोपियन युनियन का सदस्य बना। यहां बोले जाने वाली भाषा को बुल्गेरियन और निवासियों को बुल्गेरियाई कहा जाता है। यहां की करंसी का नाम है 'लेव'। बुल्गारिया की जनसंख्या लगभग 70 लाख है। बुल्गारिया की सेना ने कभी भी युद्ध में अपना झण्डा नहीं खोया। 19वीं शताब्दी के बाद से बुल्गारिया ने यूरोप में कई युद्धों में भाग लिया। हवा से गिराये जाने वाले बमों का आविष्कार व उपयोग भी सबसे पहले बुल्गारिया ने किया। दुनिया की पहली महिला जिसने युद्ध में भाग लिया वह भी बुल्गेरियाई थी और उसका नाम था वायु सेना पायलट रेना कसाबोवा। एक मजेदार बात आपको

बताते हैं कि सिरिलिक एल्फाबेट की उत्पत्ति बुल्गारिया में हुई। इस एल्फाबेट को 9वीं सेंचुरी में प्रेस्लाव लिटरेरी स्कूल में ईसाई मिशनरियों सिरिल और मेथेडियस द्वारा बनाई गई थी। बुल्गारिया में सबसे पुराना स्लॉविक ओर्थोडॉक्स चर्च है। अन्य दर्शनीय स्थल के रूप में रीला मठ है जहां रीला क्रॉस रखा गया है। इस लकड़ी के क्रॉस पर बाईबिल के 140 सूक्ष्म दृश्य और 1500 से अधिक आकृतियां बनी है। स्कॉटलैंड और आयरलैंड के अलावा बुल्गारिया दुनिया का एक मात्र देश है जो बैगपाईप का उपयोग करता है। बुल्गारिया में गुलाब यानी रोज़ बहुतायत में होता है। यहां से सर्वाधिक एक्सपोर्ट गुलाब ही होता है। दुनिया में एक्सपोर्ट होने वाले 85 प्रतिशत गुलाब बुल्गारिया के होते हैं। बुल्गारिया के गुलाब के फूलों की पत्तियां सबसे सुंदर होती हैं। बुल्गारिया की रोज़ वैली के गुलाब का तेल पूरी दुनिया में एक्सपोर्ट होता है। आपने दही तो खूब खाया होगा लेकिन क्या आप जानते हैं कि बुल्गारिया का दही अपने शानदार स्वाद के कारण दुनिया में सबसे अच्छा माना जाता है। वैसे तो यह देश छोटा सा है लेकिन यहां दुनिया की सबसे ज्यादा वाईन बनती है। यहां लगभग 2 लाख टन वाईन बनती है। अब बुल्गारिया के बारे में एक मजेदार बात। पहली तो यह कि हम लोग 'हां' का ईशारा करने के लिये अपनी गर्दन को ऊपर नीचे हिलाते हैं जबकि बुल्गारिया के लोग 'नहीं' कहने के लिये ठीक ऐसा ही करते हैं। दूसरे देशों की तरह ही बुल्गारियाई नागरिक फुटबॉल के फैन होते हैं। पहले इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल कम्प्यूटर का आविष्कार बुल्गारियाई मूल के भौतिक वैज्ञानिक जॉन विन्सेंट अटानासॉफ ने किया था। फेस बुक को कौन नहीं जानता लेकिन क्या आप जानते हैं कि फेसबुक के निर्माता मार्क जुकरबर्ग भी बुल्गेरियाई है। यही नहीं कारों में जो सेफ्टी बैलून होता है, और डिजिटल वॉच का आविष्कार भी बुल्गारियाई लोगों ने किया था। आपने 'गेम ऑफ थ्रॉन्स' जरूर देखी होगी। इसमें जो ट्राईबल लीडर का रोल करने वाले बुल्गेरियाई एक्टर जैरी बाचारोव हैं। बुल्गेरिया में ही दुनिया का सबसे बड़ा आईमेक्स 3डी सिनेमा है। तो ये तो थी बुल्गारिया की बातें। अगले अंक में चलेंगे किसी और देश की यात्रा पर। तब तक के लिये संजय अंकल की ओर से बाय–बाय।

साभार – www.thetravel.com

पता– समीप सूरसागर, बीकानेर।

लच्छू की होली

दिनेश विजयवर्गीय

लच्छू इन दिनों पढ़ाई से जी चुराने लगा था। वैसे तो होली के भी दस दिन शेष थे। पर रंगों के त्यौहार होली को पास आता देख वह खुश हो रहा था। अब वह अपने पड़ोस में जलने वाली होली को एक बड़ा सा रूप देने में सहयोगी बनेगा।

लच्छू अपने पड़ोस के कुछ साथियों के साथ रात में सुरक्षित अवसर देख कभी किसी घर से लकड़ियां व कंडे चुरा लेता। कभी–सड़क से गुजर रही बैलगाड़ी में लगे लकड़ी के डंडे निकाल कर भाग जाता।

लच्छू का मित्र ललित कक्षा में पढ़ाई में होशियार था। सभी अध्यापक उसकी प्रशंसा करते। उसका व्यवहार बडों के प्रति श्रद्धा से भरा होता। लच्छू पढ़ाई में लापरवाही करता। होमवर्क भी नियमित रूप से नहीं करता।

इस बार लच्छू ने ललित को भी होली के लिए चोरी कर सामान जुटाने में सहयोगी बनने को कहा। एक दिन उसने ललित से कहा– इन दिनों बड़ा मजा आ रहा है होली जलाने के लिए सामग्री एकत्रित करने का। तू भी चला कर घर में ही क्या छुपा रहता है। कभी कम भी पढ़ लिया कर।

चित्र रेणुका खत्री

नहीं लच्छू मैं तुम्हारे इस कार्य में साथ नहीं दे सकता। शायद तुम्हें पता नहीं, चोरी करना एक बुराई है। चाहे फिर वह किसी भी अवसर पर की जाए। मैं तो तुमसे भी कहता हूं इसे छोड़ो और आने वाले टेस्ट की तैयारी करो। वरना–।

वरना क्या ? यही न कि मैं फेल हो जाऊंगा। नहीं ऐसी बात नहीं है, पर जब ठीक से पढ़ोगे नहीं तो अच्छे मार्क्स कैसे प्राप्त होंगे ? ललित ने समझाया। पढ़ाकू रामजी, अपने पास ही रखो अपनी सलाह को।

लच्छू अपनी मां का इकलौता पुत्र था। उसके पिता का साया तो

बचपन में उठ गया था। मां उसे गलतियों पर टोकती रहती। पर वह कभी अपनी मां की सलाह को गंभीरता से नहीं लेता। एक दिन वह स्कूल नहीं जा सका। रात को जब वह किसी घर से लकड़ी चुरा कर नंगे पैर भाग रहा था तो एक पैर में कांटा चुभ गया। आज उसी का दर्द उसे सता रहा था। ललित शाम को लच्छू के घर गया। उसे दर्द से दुखी देख आज भी उसने बुराई त्यागने की सलाह दी। पर वह तो अब भी अपनी हेकड़ी जता रहा था। अरे यार, यह तो सब छोटी—मोटी बातें हैं चलती रहती हैं। कल फिर से ठीक हो जाऊंगा। लच्छू ने लापरवाही भरा जवाब दिया।

दो दिन बाद लच्छू स्कूल गया। लेकिन वह फिर से एक दिन दुर्घटना ग्रस्त हो गया। ललित इस अप्रिय खबर को सुन फिर से लच्छू के घर गया। ललित को आया देख लच्छू की आंखें शर्म से झुक गईं। उसने कुछ बोलते नहीं बना। उसकी मां उसे दवा दे रही थी। उसके दाएं हाथ पर प्लास्टर बंधा था। उसकी मां ने दुखी मन से सारी घटना सुना दी। कल संध्या को जब यह किसी बैलगाड़ी से लकड़ी निकल रहा था, तो किसी नाली के पानी से गीली हुई सड़क पर फिसल कर गिरने से दायें हाथ में फैक्चर हो गया। मैं क्या करती बेटा, मैने तो इसे कई बार समझाया भी। यह कहते उसकी मां की आंखें नम हो गईं।

मांजी मैंने भी कई बार इसे सलाह दी कि होली के नाम पर कोई भी चोरी करना अच्छी बात नहीं है। पर यह माना नहीं। अब यह कल से होने वाले टेस्ट भी नहीं दे पाएगा। ललित की बात सुन लच्छू सुबक कर रोने लगा। उसने उसे धीरज बंधाया। अब रोकर पश्चात करने से कुछ नहीं होगा।

सच ललित ! कितना अच्छा होता मैं तुम्हारी और मां की सलाह समय रहते मान लेता, तो मुझे यह दुख भरे दिन नहीं देखने पड़ते। अब ना मैं टेस्ट दे पाऊंगा और ना होली ही खेल पाऊंगा। मैं कितना अभागा हो गया हूं।

नहीं लच्छू, ऐसी बात नहीं। भूल किससे नहीं होती, महानता तो उससे शिक्षा लेने की है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि अब कभी कोई गलत कार्य नहीं करूंगा और ना कभी मां का दिल दुखाऊंगा। पढ़ने में भी नियमित बना रहूंगा। लच्छू ने अपनी भूल स्वीकार की।

सच लच्छू ! तुम कितने अच्छे हो। मैं तुम्हारी पढ़ाई में रही कमजोरी अपने संग पढ़ाकर दूर कर दूंगा। और इतना ही नहीं मैं कक्षा के कुछ साथियों के साथ रंग—बिरंगी होली खेलने भी तुम्हारे पास आऊंगा। ललित की यह बातें सुन लच्छू का मन खुशियों से भर गया।

पता — 215 मार्ग 4 रजत कॉलोनी ,बूंदी

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

प्यारे बच्चों, चलिए इस माह की खगोलिय घटनाओं के बारे में जानते है। तो सबसे पहले बात करते है। हमारे सौर मण्डल के सबसे छोटे ग्रह ''बुध'' की। बुध ग्रह सबसे छोटा भी है और सूर्य के सबसे नजदीक भी है। इस माह 8 मार्च को बुध महानतम पूर्वी बढ़ाव पर रहेगा।

चित्र साभार www. phys.org

बुध ग्रह सूर्य से 18.2 डिग्री के उच्चतम पूर्वी विस्तार तक पहुंचता है। यह बुध को देखने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि यह शाम के आकाश में क्षितिज के ऊपर अपने उच्चतम बिंदु पर होगा। सूर्यास्त के तुरंत बाद पश्चिमी आकाश में टेलिस्कोप की सहायता से देख सकते है।

इसके बाद हम बात करते है 'मंगल ग्रह' की। मंगल केवल बुध से बड़ा है, बाकी ग्रहों से छोटा। यानी यह हमारे सौर मण्डल का दूसरा छोटा ग्रह है। इसको लाल ग्रह भी कहते है। दिनांक 20 मार्च को मार्च विषुव होगा। मार्च विषुव 08:58 यूटीसी पर होता है। सूर्य भूमध्य रेखा पर सीधा चमकेगा और पूरे विश्व में दिन और रात लगभग बराबर होंगे। यह उत्तरी गोलार्ध में वसंत का पहला दिन (वसंत विषुव) और दक्षिणी गोलार्ध में पतझड़ का पहला दिन (शरद ऋतु विषुव) भी है। तो बहुत ही रोचक घटना है।

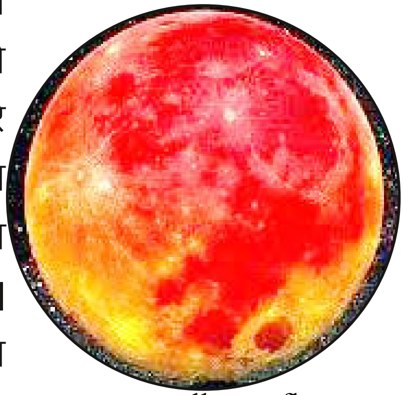

साभार www.wallpaperflare.com

अब बात करते है सौर मण्डल की सबसे महत्त्वपूर्ण खगोलिय घटना की। जी हां, मैं बात कर रहा हूं ''ग्रहण'' की। ग्रहण के बारे में कई प्रकार की भ्रांतियां फैला रखी है। लेकिन इसके खगोलिय

कारणो का पता करते है। तो जानते सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण क्या होते है ?

जब चंद्रमा, पृथ्वी और सूर्य के बीच से गुज़रता है, तब सूर्य ग्रहण लगता है। इस दौरान चंद्रमा सूर्य को कुछ समय के लिए ढक लेता है और पृथ्वी पर अंधेरा हो जाता है।

चंद्र ग्रहण तब होता है जब सूर्य, पृथ्वी व चंद्रमा एक सीध में आ जाते हैं और चंद्रमा पृथ्वी की छाया में चला जाता है। पूर्ण चंद्र ग्रहण में पूरा चंद्रमा पृथ्वी की छाया के अंधेरे हिस्सा में आ जाता है, जिसे अम्ब्रा कहा जाता है।

ग्रहण की बात मैंने यहां इसलिए

चित्र साभार www.amarujala.com

की क्योंकि इस माह क्योंकि 14 मार्च को पूर्ण चंद्र ग्रहण होगा। लेकिन यह भारत में नहीं उत्तरी अमेरिका, मैक्सिको, मध्य अमेरिका और दक्षिण अमेरिका में दिखाई देगा। ग्रहण के दौरान, चंद्रमा धीरे–धीरे गहरा होता जाएगा और फिर जंग जैसा या रक्त लाल रंग का हो जाएगा। (नासा मानचित्र और ग्रहण सूचना)

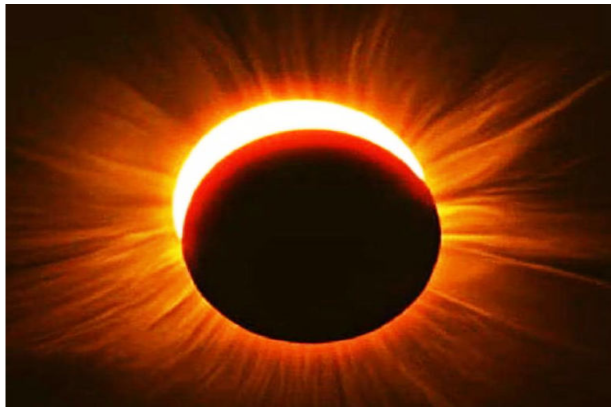

चित्र साभार www.naidunia.com

इसी प्रकार 29 मार्च को आंशिक सूर्य ग्रहण देखा जा सकता है। यह भी

भारत में नहीं दिखाई देगा इसको ग्रीनलैंड और अधिकांश उत्तरी यूरोप और उत्तरी रूस में देखा जा सकता है। इस ग्रहण को कनाडा से सबसे अच्छी तरह देखा जाएगा। आंशिक सूर्य ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा सूर्य के केवल एक हिस्से को ढकता है, कभी–कभी कुकी से निकाले गए टुकड़े जैसा दिखता है। आंशिक सूर्य ग्रहण को केवल एक विशेष सौर फिल्टर के साथ या सूर्य के प्रतिबिंब को देखकर ही सुरक्षित रूप से देखा जा सकता है। (नासा मानचित्र और ग्रहण सूचना)

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते है। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी पा सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - प्रातः 11:00 से सायं 6:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com